



## DAILY NEWS BULLETIN

LEADING HEALTH, POPULATION AND FAMILY WELFARE STORIES OF THE DAY  
Tuesday 20210601

### कोरोना

दो महीने में मिले कोरोना के सबसे कम केस, एक्टिव मामले 20 लाख से भी नीचे (Hindustan: 20210601)

<https://www.livehindustan.com/national/story-lowest-cases-of-corona-found-in-two-months-1-27-lakh-while-active-cases-below-20-lakh-covid-19-4081224.html>

कोरोना वायरस की दूसरी लहर ने भारत में जमकर तांडव मचाया और हर दिन हजारों जानें लीं। लेकिन इस बीच एक बार फिर राहत की खबर आ रही है। दरअसल, बीते 24 घंटों में भारत में कोरोना के 1,27,510 नए मामले देखने को मिले हैं। पिछले 2 महीनों में ये आंकड़ा पहली बार इतना नीचे गया है। यानी कोरोना की रफ्तार फिर धीमी पड़ने लगी है। सक्रिय मामलों की बात करें तो ये आंकड़ा 18,95,520 पर है। 43 दिनों में ये पहली बार है जब सक्रिय मामले 20 लाख से नीचे देखे गए हैं। केवल 24 घंटों में सक्रिय मामलों में 1,30,572 की कमी आई है।

वहीं 24 घंटों में 2,795 लोगों की मौत हुई है। इसके साथ ही देश में कोरोना से मरने वालों की संख्या 3,31,895 हो गया है।

लगातार बढ़ रहा रिकवरी रेट

देश भर में अब तक 2,59,47,629 लोग पूरी तरह से ठीक हो चुके हैं। सिर्फ बीते 24 घंटों के दौरान 2,55,287 मरीज ठीक हुए। लगातार 19वें दिन देखा गया कि दैनिक नए मामलों की तुलना में ठीक होने की संख्या लगातार बढ़ रही है। रिकवरी रेट फिलहाल 92.09% पर है और लगातार बढ़ रहा है।

साप्ताहिक संक्रमण दर की बात करें तो ये फिलहाल 8.64% पर है। इसके साथ ही दैनिक कोरोना संक्रमण दर 6.62% पर आ गई है।

लगायी गयीं कोविड-19 टीके की 21.6 करोड़ खुराक

कोरोना के कहर के बीच वैक्सीन से बड़ी राहत है। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय ने सोमवार को बताया था कि देश में अब तक कोविड-19 टीके की 21.6 करोड़ से अधिक खुराक लगायी जा चुकी हैं। मंत्रालय ने बताया कि सोमवार को 18-44 साल आयु वर्ग के 12,23,596 लोगों को टीके की पहली खुराक दी गयी जबकि 13,402 को दूसरी खुराक लगायी गयी।

दिल्ली में कोरोना संक्रमण दर 1% के नीचे

इधर, दिल्ली में कोरोना की स्थिति में लगातार सुधार आ रहा है और कोरोना पॉजिटिविटी रेट 1% के नीचे (0.99%) पहुंच गया है। 19 मार्च के बाद यह पहली बार है जब पॉजिटिविटी रेट 1% से नीचे है। दिल्ली में पिछले 24 घंटों में 648 नए मामले सामने आए हैं जबकि 86 लोगों की मौत कोरोना संक्रमण के कारण हुई है।

राजधानी में नए मामले भी घटे, 24 घंटे में 648 नए संक्रमित मिले

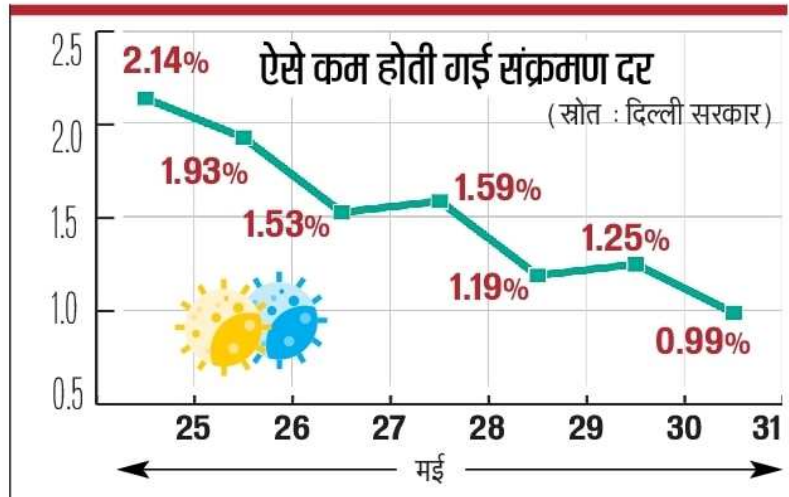
# कोरोना संक्रमण की दर एक फीसदी से नीचे आई

राहत

नई दिल्ली | वरिष्ठ संवाददाता

दिल्ली में कोरोना के मामले तेजी से कम हो रहे हैं। सोमवार को लगातार तीसरे दिन कोरोना के मामले एक हजार से कम रहे। सोमवार को दिल्ली में 19 मार्च के बाद संक्रमण दर एक फीसदी से कम रही। इससे पहले 19 मार्च को दिल्ली में कोरोना से संक्रमण दर 0.9 फीसदी दर्ज की गई थी।

दिल्ली के स्वास्थ्य विभाग के अनुसार सोमवार को 648 नए मामले सामने आए। वहीं 1622 मरीजों ने कोरोना को मात दी, जबकि 86 मरीजों ने संक्रमण के कारण दम तोड़ दिया। दिल्ली में अभी तक 14,26,240 मरीज कोरोना से संक्रमित हो चुके हैं जबकि 13,90,963 मरीज स्वस्थ हो



चुके हैं। दिल्ली में 24237 मरीज कोरोना से दम तोड़ चुके हैं। कोरोना से कुल मृत्युदर 1.7 फीसदी है।

स्वास्थ्य विभाग के अनुसार दिल्ली में कोरोना के सक्रिय मरीज घटकर 11040 रह गए हैं। इनमें से दिल्ली के अस्पतालों में 4784 मरीज भर्ती हैं, जबकि होम आइसोलेशन में 5374

मरीज हैं। विभाग के अनुसार दिल्ली में कोरोना की जांच के लिए रविवार को 65240 जांच किए गए, जिसमें 0.99 फीसदी संक्रमित पाए गए। इन जांच के लिए आरटीपीसीआर से 50003 और रैपिड एंटीजन से 15237 टेस्ट किए गए। अभी तक कुल 19302280 टेस्ट किए गए हैं।

सलाह

## कोविड से बिगड़े शरीर और दिमागी सेहत को इस तरह वापस पाएं



कोरोना से डरिए मत  
सावधान रहिए

49

### शरीर में अनचाहे बदलावों को स्वीकार करें



अमेरिकन साइकोलॉजिकल सोसायटी का कहना है कि महामारी के कारण शरीर में आए अनचाहे बदलाव जैसे वजन बढ़ना, चिड़चिड़ापन, नींद कम या बहुत ज्यादा आने को स्वीकारने की जरूरत है। जब तक आप अपने अंदर आए अनचाहे बदलावों को नजरअंदाज करते रहेंगे, तब तक उनमें सुधार नहीं किया जा सकता।

42%

वयस्कों का वजन 6-7 किलो तक अनचाहे रूप से बढ़ गया है

कोरोनाकाल में जो लोग खुद को स्वस्थ मानते हैं, उनमें से अधिकांश लोगों की शारीरिक व मानसिक सेहत अब पहले जैसी नहीं रही। सालभर से घर तक ही सीमित रहने के कारण लोग मोटापे से पीड़ित हो गए हैं, इसके अलावा बहुत से लोग गहरे मानसिक अवसाद से पीड़ित हैं। अमेरिका के मिशिगन विश्वविद्यालय ने इन स्थितियों से उबरकर दोबारा जिंदगी शुरू करने वालों के लिए विशेष सलाह जारी की है। आइए जानते हैं कि बिगड़े शरीर और दिमागी सेहत को कैसे वापस पा सकते हैं।

### सुधार की व्यावहारिक योजना बनाएं

अध्ययन के मुताबिक, अनचाहे बदलावों को सुधारने के लिए हमें एक नियत समयावधि के लिए योजना बनानी चाहिए। जो सुधार करना चाहते हैं, उनकी समयावधि व्यावहारिक भी हो। उदाहरण के लिए आप दो किलो वजन एक महीने के अंदर घटाना चाहेंगे तो यह व्यावहारिक होगा, जबकि महीनेभर में पांच किलो वजन घटाना मुश्किल या असंभव भी हो सकता है।

### नींद सुधारने के लिए वातावरण पर ध्यान

आप ठीक ढंग से सो नहीं पा रहे हैं तो बेडरूम के वातावरण पर नजर दौड़ाइए। सुनिश्चित कीजिए कि आप जिस जगह सो रहे हैं, वह एक शांत और कम रोशनी वाला कमरा हो। सोने से पहले टहलना या फिर किताब पढ़ने जैसी आदतों को फिर से अपनाएं। कमरे के अंदर ही या बालकनी में टहलना बेहतर होगा। केफ़ीनयुक्त पेय का कम से कम इस्तेमाल करें।

18%

लोगों के शरीर के वजन में कोरोनाकाल में गिरावट दर्ज की गई

66%

लोगों ने नींद के पैटर्न में बदलाव दर्ज किया एक साल में

23%

लोग तालाबंदी के कारण एल्कोहल का अत्यधिक प्रयोग करने लगे

( स्रोत : अमेरिकन साइकोलॉजी एसोसिएशन सर्वे )

[https://epaper.livehindustan.com/imageview\\_841485\\_80633310\\_4\\_1\\_01-06-2021\\_3\\_i\\_1\\_sf.html](https://epaper.livehindustan.com/imageview_841485_80633310_4_1_01-06-2021_3_i_1_sf.html)

सफदरजंग अस्पताल के नेत्र रोग विभाग, फरीदाबाद स्थित ईएसआईसी मेडिकल कॉलेज और अस्पताल के कम्युनिटी मेडिसिन विभाग ने किया शोध

# लॉकडाउन में गैजेट के इस्तेमाल से बढ़ी विजन सिंड्रोम की शिकायतें

## अध्ययन

नई दिल्ली | ललित कौशिक

लॉकडाउन में इलेक्ट्रॉनिक गैजेट (कंप्यूटर, मोबाइल, आईपैड, लैपटॉप, टैबलेट) के अधिक इस्तेमाल से होने वाले नुकसान को लेकर सफदरजंग अस्पताल के नेत्र रोग विभाग, फरीदाबाद स्थित ईएसआईसी मेडिकल कॉलेज और अस्पताल के कम्युनिटी मेडिसिन विभाग ने अध्ययन किया है। रिपोर्ट में

करीब 69 फीसदी लोग कंप्यूटर विजन सिंड्रोम (सीवीएस) से ग्रसित मिले। वहीं, 21.6 फीसदी में रिपेटिटिव स्ट्रेन इंजरी (आरएसआई) देखने को मिली।

इंडियन जर्नल ऑफ हेल्थ साइंसेज एंड बायोमेडिकल रिसर्च में प्रकाशित अध्ययन में कहा गया है कि जिन्होंने नौ घंटे से अधिक समय हर रोज इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों पर बिताया उनमें से 9.94% में सीवीएस की दर दस गुना से अधिक थी।

**लॉकडाउन की अवधि में अध्ययन:** सफदरजंग अस्पताल के



**32** फीसदी लोग इलेक्ट्रॉनिक गैजेट प्रयुक्त करने वालों में कॉरपोरेट व मिजी क्षेत्र से

नेत्र विभाग के डॉक्टर पंकज रंजन और फरीदाबाद स्थित ईएसआईसी मेडिकल कॉलेज और अस्पताल के कम्युनिटी मेडिसिन विभाग की

## उंगलियों में दर्द की शिकायत

आरएसआई को लेकर 21.6% ने हाथ और उंगलियों में दर्द और 17.3% ने कलाई में दर्द की शिकायत की। आंख संबंधी परेशानी बताने वालों में अधिकतर टैब फोन, कंप्यूटर और लैपटॉप का प्रयोग करने वाले थे। टीवी देखने और टैब फोन का इस्तेमाल करने वालों ने आंखों के आगे धुंधलापन होने की बात भी कही।

डॉक्टर स्नेहा कुमारी और डॉ. मिताशा सिंह ने यह अध्ययन पिछले वर्ष लॉकडाउन के दौरान अप्रैल और मई की अवधि में किया। इसके लिए

## ज्यादा प्रयोग से परेशानी

आरएसआई के लक्षण वाले लोग लैपटॉप, कंप्यूटर, मोबाइल फोन और टैब का अधिक इस्तेमाल कर रहे थे। अध्ययन के दौरान यह भी देखने को मिला कि जितना अधिक इलेक्ट्रॉनिक गैजेट का इस्तेमाल किया गया उतना ही लोग सीवीएस से ग्रसित होते गए।

उत्तर भारत के अलग-अलग शहरों के 255 लोग अध्ययन का हिस्सा बने। इसमें 158 पुरुष और 97 महिलाएं थीं। इलेक्ट्रॉनिक गैजेट का

## मोबाइल का उपयोग ज्यादा

अध्ययन में 97.6% लोग मोबाइल का प्रयोग, 65.5% लैपटॉप और कंप्यूटर, 21.9% टीवी देखने वाले और 17.6% टैब जैसे इलेक्ट्रॉनिक गैजेट का इस्तेमाल करने वाले थे। इसमें 70% पुरुषों ने माना कि बंदी के लागू होने से गैजेट के इस्तेमाल की अवधि बढ़ी है। 60% महिलाएं भी इससे सहमत थीं।

इस्तेमाल करने वालों में कॉरपोरेट और निजी क्षेत्र से सर्वाधिक 32.2 फीसदी लोग थे। दूसरे स्थान पर स्वास्थ्यकर्मी पाए गए।

## बायोसेफ्टी आटोप्सी लैब

**अब कोरोना के खिलाफ जंग में बायोसेफ्टी आटोप्सी लैब की दरकार, जानिए क्या है बायोसेफ्टी आटोप्सी लैब, कैसे करेगा काम (Dainik Jagran: 20210601)**

<https://www.jagran.com/delhi/new-delhi-city-now-the-need-for-biosafety-autopsy-lab-in-the-war-against-corona-know-what-is-biosafety-autopsy-lab-how-will-it-work-jagran-special-21694181.html>

देश में कोरोना से मृत्यु दर कम होने के बावजूद करीब सवा तीन लाख लोग जान गंवा चुके हैं। यदि बायोसेफ्टी आटोप्सी लैब विकसित हो तो कोरोना से होने वाली मौत के असल कारणों का पता लगाकर इस घातक वायरस पर जोरदार प्रहार किया जा सकता है।

नई दिल्ली, [रणविजय सिंह]। देश में कोरोना से मृत्यु दर कम होने के बावजूद करीब सवा तीन लाख लोग जान गंवा चुके हैं। तीसरी लहर का खतरा भी बना हुआ है। ऐसे में कोरोना के खिलाफ जंग में बायोसेफ्टी आटोप्सी लैब की सख्त दरकार है। पिछले साल कोरोना का संक्रमण शुरू होने के बाद से ही इसकी जरूरत महसूस की जा रही है। इसलिए एम्स में बायोसेफ्टी आटोप्सी लैब विकसित करने की योजना भी है लेकिन यह मामला एक साल से भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद (आइसीएमआर) में लंबित है।

डाक्टर कहते हैं कि यदि बायोसेफ्टी आटोप्सी लैब विकसित हो तो कोरोना से होने वाली मौत के असल कारणों का पता लगाकर इस घातक वायरस पर जोरदार प्रहार किया जा सकता है। मौजूदा समय में देश में एक भी ऐसा आटोप्सी लैब नहीं है जहां बेहद सुरक्षित तरीके से किसी घातक वायरस से संक्रमित मरीज का पोस्टमार्टम किया जा सके। विदेश में भी इस तरह की ज्यादा सुविधा नहीं है। कोरोना का संक्रमण शुरू होने पर कुछ देशों के चिकित्सा संस्थानों में इस तरह की लैब विकसित की गई हैं। दरअसल, कोरोना से मृत व्यक्तियों के शवों के पोस्टमार्टम के दौरान शरीर के आंतरिक हिस्से से निकलने वाले फ्लूड से संक्रमण होने का खतरा होता है।

इस वजह से पोस्टमार्टम आसान नहीं होता। ऐसे मामलों में पोस्टमार्टम के लिए बायोसेफ्टी आटोप्सी लैब की जरूरत होती है। एम्स के फॉरेंसिक मेडिसिन विभाग के विभागाध्यक्ष डा. सुधीर गुप्ता ने कहा कि आइसीएमआर व विश्व के चिकित्सा समुदाय को बायोसेफ्टी आटोप्सी लैब विकसित करना चाहिए। इससे कोरोना से मृत व्यक्तियों के शवों के परीक्षण और शोध से यह समझने में मदद मिलेगी

कि मरीजों में मौत के असल कारण क्या रहे? उन कारणों का पता लगाकर तीसरी लहर आने पर इलाज का प्रोटोकाल तैयार किया जा सकेगा।

क्या होता है बायोसेफ्टी आँटोप्सी लैब

दुनिया के कई शोध में यह बात सामने आई है कि लैब आधारित संक्रमण आटोप्सी लैब में काम करने वाले कर्मचारियों में अधिक होता है। बायोसेफ्टी आटोप्सी लैब में ऐसी आशंका नहीं रहती। इस वजह से शव के आंतरिक हिस्से का सुरक्षित तरीके से परीक्षण कर मौत के कारणों का पता लगाया जा सकता है। वर्ष 2003 में चीन में सार्स का संक्रमण होने पर बीएलएल-3 (बायोसेफ्टी लेवल-3) आटोप्सी लैब तैयार की गई थी। लैब में स्वच्छ हवा के प्रवेश और निकास के सिस्टम में उच्च दक्षता पार्टिकुलेट एयर फिल्टर (हेफा फिल्टर) लगाए गए थे। लिहाजा लैब को इस तरह डिजाइन किया जाता है कि बाहर से संक्रमण अंदर न प्रवेश करने पाए और लैब के अंदर से भी संक्रमण बाहर न जाने पाए। आटोप्सी के लिए बिल्कुल अलग कमरा होता होता है, जो बंद रहता है।

## विश्व दुग्ध दिवस

**विश्व दुग्ध दिवस : मानव स्वास्थ्य के लिए गाय का दूध है सर्वोत्तम और बकरी का दूध अति गुणकारी (Dainik Jagran: 20210601)**

<https://www.jagran.com/uttar-pradesh/varanasi-city-cow-milk-is-the-best-for-human-health-and-goat-milk-is-very-beneficial-jagran-special-21695152.html>

जब कभी भी संपूर्ण आहार की बात होती है सबसे पहले दूध का नाम सामने आता है। इसमें प्रोटीन विटामिन-ए बी-1 बी-12 विटामिन-डी पोटैशियम मैग्नीशियम आदि बहुत से जरूरी तत्व होने की वजह से इसे सबसे ज्यादा पोषक माना जाता है।

वाराणसी, जेएनएन। जब कभी भी संपूर्ण आहार की बात होती है, सबसे पहले दूध का नाम सामने आता है। इसमें प्रोटीन, विटामिन-ए, बी-1, बी-12, विटामिन-डी, पोटैशियम, मैग्नीशियम आदि बहुत

से जरूरी तत्व होने की वजह से इसे सबसे ज्यादा पोषक माना जाता है। शाकाहारी के लिये दूध को पूर्ण भोजन माना जाता है क्योंकि इसमें प्रोटीन, फैट, कार्बोहाइड्रेट और वे सारे विटामिन और मिनरल्स पाए जाते हैं जो एक अच्छे स्वास्थ्य के लिए जरूरी होते हैं।

दूध में मौजूद इतने सारे पोषक और पाचक गुण होने की वजह से इसे आयुर्वेद में एक अलग ही स्थान दिया गया है। चौकाघाट स्थित राजकीय स्नातकोत्तर आयुर्वेद महाविद्यालय एवं चिकित्सालय के काय चिकित्सा एवं पंचकर्म विभाग के डा. अजय कुमार बताते हैं कि सामान्य तौर पर दूध मधुर, चिकना, ओज एवं रस आदि धातुओं को बढ़ाने वाला, वात-पित्त कम करने वाला, वीर्य को बढ़ाने वाला, कफकारक, भारी और शीतल होता है। आयुर्वेद के अनुसार स्वास्थ्य लाभ लेने के लिए सबसे पहले यह जानना जरूरी है कि दूध किस जानवर का है और इसे कैसे व कब पीना चाहिए।

आयुर्वेद में आठ प्रकार के दूध का है उल्लेख

- आयुर्वेद के आचार्यों ने मुख्य रूप से आठ प्रकार के दूध का उल्लेख किया है। इनमें गाय, भैंस, बकरी, ऊंटनी, घोड़ी, हथिनी, गधी और स्त्री के दुग्ध पर विशेष वर्णन मिलता है। इन आठों में से स्त्री यानी मां का दूध सर्वोत्तम बताया गया है। इसके बाद गाय और बकरी के दूध को अधिक गुणकारी बताया गया है।

गाय का दूध : देशी गाय का दूध सभी जानवरों के दूध में सर्वश्रेष्ठ होता है। इसमें जीवनीय शक्ति और ओज को बढ़ाने वाले सभी गुण होते हैं।

भैंस का दूध : इसमें गाय के दूध से अधिक वसा होती है तथा पचाने में भारी और अधिक शीतप्रकृति का होता है। इसे पीने से अधिक नींद आती है। अधिक भूख लगने की बीमारी में इससे लाभ होता है। अधिक वजन वाले लोगों को इसका सेवन नहीं करना चाहिए।

बकरी का दूध : इसका दूध थोड़ा मीठा और कसैला होता है। शीघ्र पच जाता है तथा डायरिया और राजयक्ष्मा में बहुत ही फायदेमंद होता है। छोटे बच्चों जिनके मां का दूध नहीं मिल पाता, उन्हें गाय के दूध के बदले बकरी के दूध से लाभ पहुंचता है।

अन्य दूध : ऊंटनी, घोड़ी और गधी का दुग्ध भी अलग-अलग रोगों में फायदेमंद होता है, लेकिन यह आसानी से उपलब्ध नहीं होता है।

अलग-अलग समय निकाले गए दूध की तासीर भी होती है जुदा



- आयुर्वेद के अनुसार एक ही देशी गाय का दूध भी अलग-अलग कारणों से अलग-अलग गुण वाला हो जाता है। सुबह-सवेरे निकाला गया दूध भारी व अधिक शीतल होता है। इसका पाचन बहुत देर से होता है और कब्ज बनाता है। इसलिए डायरिया रोगी को सुबह गाय का दूध देना फायदेमंद होता है। शाम को निकाला गया दूध सारक होता है। यह कब्ज के रोगियों के लिए फायदेमंद होता है और इसका पाचन आसानी से हो जाता है। सुबह का कच्चा दूध जिसे उबला नहीं गया है, तो भिष्यंदी और भारी होता है जिससे पेट में भारीपन और अपच की शिकायत हो सकती है। मगर इसी दूध को उबाल देने से इसका भारीपन कम हो जाता है, जिसे पीने पर नुकसान नहीं करता। वहीं दूध को बहुत अधिक देर तक उबाल दिया जाए तो भी यह भारी हो जाता है। इसलिए इसे बहुत अधिक देर तक उबाल कर नहीं पीना चाहिए। वजन बढ़ाना हो तो यह दूध लाभदायक होता है।

इनके साथ न करें दूध का सेवन

- केले को दूध के साथ नहीं इस्तेमाल करना चाहिए, क्योंकि दूध के साथ केला मिलकर अत्यधिक शीत और भारी हो जाता है। इसकी वजह से सर्दी, खांसी, जुकाम, एलर्जी और स्किन पर चकत्ते पड़ने लगते हैं।

- दुग्ध को मछली के साथ नहीं लेना चाहिए।

- दुग्ध को अम्ल द्रव्यों यानी खट्टी चीजों के साथ नहीं लेना चाहिए।

## गिलोय

देश में गिलोय हो सकती है राष्ट्रीय औषधि घोषित, केंद्र सरकार ने तैयार की रणनीति (Dainik Jagran: 20210601)

<https://www.jagran.com/delhi/new-delhi-city-ncr-giloy-can-be-declared-national-medicine-in-india-jagran-special-21697137.html>

केंद्र सरकार ने गिलोय को गुणों से भरपूर माना है। गिलोय अनेक अलग-अलग बीमारियों में लाभदायक है। सभी राज्यों में इसका प्रचार प्रसार करने की केंद्र ने रणनीति तैयार की है। इसके गुणों को लेकर विभिन्न राज्यों में 30 से अधिक शोध करने की तैयारी की है।

नई दिल्ली [वीके शुक्ला]। यह खबर राहत भरी है कि विभिन्न प्रकार के संक्रमण रोकने में कामयाब साबित हो चुकी गिलोय राष्ट्रीय औषधि घोषित हो सकती है। केंद्र सरकार ने गिलोय को गुणों से भरपूर माना है। गिलोय अनेक अलग-अलग बीमारियों में लाभदायक है। सभी राज्यों में इसका प्रचार प्रसार करने की केंद्र ने रणनीति तैयार की है। इसके गुणों को लेकर विभिन्न राज्यों में 30 से अधिक शोध करने की तैयारी की है। आयुष मंत्रालय ने एक आरटीआइ में गिलोय को राष्ट्रीय औषधि घोषित किए जाने के प्रयासों के बारे में पूछे जाने पर यह जानकारी दी है।

पौराणिक कथाओं में गिलोय का उल्लेख मिलता है। जिसमें कहा गया है कि गिलोय के गुण, अमृत के समान हैं। यह बात भी साबित हो चुकी है कि गिलोय अलग-अलग बीमारियों में लाभदायक है। इसे आयुर्वेद, होम्योपैथी और प्राकृतिक चिकित्सा के रूप में उपयोग किया जा रहा है। कोराना काल में भी गिलोय राम बाण साबित हुई है। अनेक लोगों ने गिलोय को इस दौरान आजमाया है और कोरोना का संक्रमण रोकने के लिए बनाई गई आयुर्वेदिक दवाइयों में गिलोय का उपयोग प्रचुर मात्रा में किया गया है। बुखार के साथ साथ आजकल शुगर, एलर्जी और अस्थमा आदि के इलाज में भी इससे इलाज किया जा रहा है।

गांव कादीपुर निवासी व आरटीआइ कार्यकर्ता हरपाल सिंह राणा गिलोय को राष्ट्रीय औषधि घोषित कराने के लिए दो साल से प्रयास कर रहे हैं। दिल्ली समेत कई राज्यों को 50 से अधिक पत्र इस बारे में लिखे कि गिलोय को राज्य औषधि घोषित किया जाए। इसी दौरान केंद्र सरकार और प्रधानमंत्री को पत्र लिखे हैं। इसके साथ ही कई आरटीआइ भी लगाईं। अंतिम बार सितंबर 2020 में आयुष मंत्रालय में आरटीआइ लगाईं। जिसका जवाब आयुष मंत्रालय के तहत राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड की ओर से गत अप्रैल में उनके पास आया है। जिसमें केंद्र सरकार ने भी गिलोय को गुणों से भरपूर माना है। केंद्र ने जवाब में कहा है कि सरकार गिलोय का प्रचार प्रसार किया जा रहा है। इस पर संगोष्ठी की जा रही है। जीवन के लिए अमृत बताकर इसके प्रचार प्रसार के लिए अभियान चलाया जा रहा है। सभी राज्यों में प्रचार प्रसार के लिए कार्यक्रम तय किए गए हैं। 2018 से अब तक अलग अलग राज्यों में 30 से अधिक शोध करने की योजना बनाई गई है।

हर जगह आसानी से उगाई जा सकती है गिलोय

डॉ. तनुजा मनोज नेसरी (निदेशक, अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान) का कहना है कि गिलोय को अमृता भी कहा जाता है। इसकी महत्ता को जन-जन तक पहुंचाने के लिए आयुष मंत्रालय की ओर से दो साल से जीवन के लिए अमृत अभियान चलाया जा रहा है। इसके तहत लोगों को गिलोय के फायदे,

उसके औषधीय गुणों, औद्योगिक खेती आदि के बारे में जागरूक किया जाता है। यह हर जगह आसानी से उगाई जा सकती है। हर व्यक्ति को इसे अपने घर के आसपास जरूर लगाना चाहिए।

कौन हैं हरपाल सिंह राणा

हरपाल सिंह राणा कादीपुर पिछले करीब साढ़े तीन दशक से जन सचिवालय के माध्यम से गरीबों और जरूरतमंद लोगों की मदद कर रहे हैं। वहीं अपने पत्रों और आरटीआइ के माध्यम से शासन प्रशासन के सामने समय-समय पर जरूरी विषयों को उठाते रहे हैं और कई नियमों में बदलाव करवा चुके हैं और नए बनवा चुके हैं।

## Vaccination

**Pace of vaccination suggests complete immunisation unlikely by year end (The Hindu: 20210601)**

<https://www.thehindu.com/news/national/pace-of-vaccination-suggests-complete-immunisation-unlikely-by-year-end/article34692090.ece?homepage=true>

Govt. target of covering 94.4 crore adults hampered by uncertain supplies

At the current pace of vaccination, it could be eight months before every adult Indian gets at least one shot of vaccine, back of the envelope calculations from the government's portal CoWin suggest. About 16.7 crore first doses have been administered as of Monday.

The Centre expects to inoculate 94.4 crore adults, according to a note last week by R.S. Sharma, Chairman of the technical committee that oversees the CoWin portal. Several Cabinet Ministers and policy advisors, spearheading India's COVID vaccination campaign, have claimed that India will inoculate "all eligible" by December. These statements don't specify if that refers to just all adults, or the number of doses administered.

Last week, India administered 30 lakh doses a day on consecutive days — after over 45 days when less than 20 million doses were given per day. Assuming that pace were to continue, it would take 256 days, or over eight months, to complete the targeted adults.

The recommended vaccination protocol is to administer two doses at least 4-16 weeks apart depending on the vaccine administered. Given that only 4.4 crore second doses have been

administered and the daily pace of second doses — for most of last month — has been about 10% of that of the first dose (on May 29, 27 lakh first doses were administered to 3 lakh second doses), it could theoretically be years before all those over 18 get their second doses. And this doesn't even include children on whom trials in India have only recently been approved.

In spite of opening vaccination for all adults, there were fewer doses administered in May — around six crore — as opposed to 7.7 crore doses administered in April.

The Health Ministry said on Sunday that close to 8 crore doses were available in May (counting wastage and stocks with States) and that 12 crore will be available in June for the Centre, States and private hospitals.

India hit a highpoint of administering 45 lakh doses a day on April 5 after which the pace has declined. Even at 20-30 lakh doses a day now, it's only ahead of China in the number of daily doses being administered. The latter claims to administer 15 million doses everyday.

Experts say that India has the capacity to administer 100 lakh shots a day and can draw from its experience of the childhood immunisation programme, provided the supply of vaccines is not a constraint. That works out to about 25-30 crore vaccines being supplied a month.

“Drawing on our capacity of at least a 1,50,000 support staff (Auxiliary Nursing Midwife), we have been able to administer polio drops to at least 30 million children within days,” said Sujatha Rao, former Health Secretary. “However the problem we face [with COVID vaccines] is that there isn't certainty on the supply.”

Bharat Biotech, the makers of Covaxin, has said that it took four months for a batch of vaccines produced to be made ready for supply.

“Vaccine makers are changing supply estimates every month and because they are differently priced and States are procuring on their own, it hampers distribution,” Ms Rao said.

Dr. Chandrakant Lahariya, epidemiologist and former consultant to the World Health Organisation said that until at least October there would be supply constraints. “It would be quite likely that India would move to a single shot vaccine administration policy. 100 lakh a day is doable, but we also have to account for people's receptiveness in the future.”

He added that experience with childhood immunisation had shown that vaccine coverage was rarely 100% even if everyone eligible was willing to get themselves inoculated.

A steady inoculation of 50-70 lakh doses a day, he said, could be done without compromising on other healthcare programmes.

Dr Jayprakash Muliyl, who's a member of the Centre's committee on recommending an appropriate vaccination schedule said the second wave had conferred a 'significant' degree of 'community immunity' and that even a single shot of vaccine would confer significant protection.

## **Dengue**

### **Delhi reports 29 dengue cases due to rains in May (Hindustan Times: 20210601)**

<https://www.hindustantimes.com/cities/delhi-news/delhi-reports-29-dengue-cases-due-to-rains-in-may-101622522460435.html>

Experts said spells of rainfall, which creates breeding grounds for the aedes aegypti mosquito that spreads the infection, could be a reason for the higher dengue cases this year so far

Delhi has reported 29 cases of the mosquito-borne disease dengue between January and May, the highest in this period in the four years, according to the municipal corporations of Delhi. Of this, 10 cases were reported in April and 12 in May, which is slightly higher than usual.

Experts said the cases reported early in the year are not indicative of whether there is likely to be an outbreak.

As many as 40 dengue cases were reported in May 2017, which was not an outbreak year for dengue. The year ended with just over 4,700 cases and 10 deaths. Only 11 cases were reported till May 2015, when Delhi had one of its worst dengue outbreaks that affected nearly 16,000 and killed 60.

Experts said spells of rainfall, which creates breeding grounds for the aedes aegypti mosquito that spreads the infection, could be a reason for the higher dengue cases this year so far. The dengue-causing mosquito breeds in cleaner, stagnant water, and its number explodes when there are spells of rain followed by warm days.

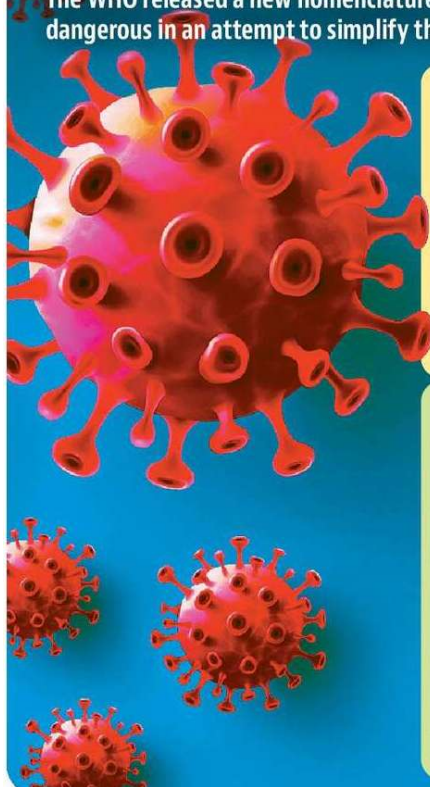
The Delhi government after the dengue outbreak in 2015 started training schoolchildren to check the breeding of mosquitoes in their homes and neighbourhoods.

So far, the city has also reported 29 malaria and four chikungunya cases.

<https://epaper.hindustantimes.com/Home/ArticleView>

# SARS-COV-2 VARIANTS RENAMED

The WHO released a new nomenclature to denote variants of the Sars-Cov-2 that may make the coronavirus more dangerous in an attempt to simplify their names and discourage the practice of associating these to regions or countries



## VARIANTS OF CONCERN

Established to have attributes that make them 'fitter' than the first version of the virus

NEW WHO LABEL	PANGO LINEAGE (MOST COMMONLY USED CODE)	FIRST FOUND IN	DATE OF DESIGNATION	CONCERN BECAUSE
ALPHA	B.1.1.7	UK (Kent); September, 2020	Dec 18, 2020 (VOC)	Spreads more rapidly than predominant virus
BETA	B.1.351	South Africa; May, 2020	Dec 18, 2020	Shows significant resistance
GAMMA	P.1	Brazil; November 2020	Jan 11, 2021	Shows some resistance, enhanced infectivity
DELTA	B.1.617.2	India; October, 2020	May 11, 2021	Significantly more transmissible; somewhat resistant

## VARIANTS OF INTEREST

These are being investigated by scientists at present

NEW WHO LABEL	PANGO LINEAGE (MOST COMMONLY USED CODE)	FIRST FOUND IN	DATE OF DESIGNATION	CONCERN BECAUSE
EPSILON	B.1.427/B.1.429	US (California); March, 2020	March 5, 2021	May be more transmissible
ZETA	P.2	Brazil; April, 2020	March 17, 2021	May be more resistant
ETA	B.1.525	Multiple countries; Dec, 2020	March 17, 2021	May be more resistant to vaccines
THETA	P.3	Philippines; Jan, 2021	March 24, 2021	Has some of the same mutations as the other VOCs
IOTA	B.1.526	US (New York); Nov, 2020	March 24, 2021	May be more resistant
KAPPA	B.1.617.1	India; October, 2020	April 4, 2021	May be more resistant, spread more readily

## WHY THE NEW NAMES?

In an advisory issued in 2015, the WHO discouraged the practice of using names that linked a pathogen to a region, people or animals – such as 'swine flu' and 'Middle East Respiratory Syndrome'.

"This may seem like a trivial issue to some, but disease names really do matter to the people who are directly affected. We've seen certain disease names provoke a backlash against members of particular religious or ethnic communities, create unjustified barriers to travel, commerce and trade, and trigger needless slaughtering of food animals," it said.

**THEY WILL NOT REPLACE EXISTING SCIENTIFIC NAMES, BUT ARE AIMED TO HELP IN PUBLIC DISCUSSION OF VOI/VOC**

—MARIA VAN KERKHOVE, Covid-19 technical lead, WHO

## **Black Fungus**

### **COVID-19 increases black fungus infection risk in India (Medical News Today: 20210601)**

<https://www.medicalnewstoday.com/articles/covid-19-increases-black-fungus-infection-risk-in-india#Next-steps-for-treatment>

Mucormycosis, or black fungus, is a rare but serious infection that requires medication or removal surgery.

SARS-CoV-2 infection and COVID-19 treatment make the immune system vulnerable to other infections, including black fungus.

With the rise in black fungus cases, India faces a shortage of treatments in the face of two epidemics.

India has been facing high rates of COVID-19, with more than 27 million confirmed cases since January 2020. Also, the World Health Organization (WHO) recently announced that the B.1.617 variant of the SARS-CoV-2 virus in India is a “variant of global concern.”

Some scientists believe that severe COVID-19 could potentially weaken the body’s immune response. This could lead to increased vulnerability to other infections, especially for people who are immunocompromised.

Of particular concern is an infection called mucormycosis, commonly referred to as black fungus. In India, 90 people who recovered from COVID-19 died from mucormycosis, and there are calls by India’s health authorities to declare a mucormycosis epidemic.

Stay informed with live updates on the current COVID-19 outbreak and visit our coronavirus hub for more advice on prevention and treatment.

What is black fungus?

Mucormycosis is a rare type of fungal infection that occurs through exposure to fungi called mucormycetes. These fungi commonly occur in the environment, particularly in leaves, soil, compost, and animal dung. Mucormycetes can enter the body through breathing, inhaling, and exposed wounds in the skin.

There are different types of mucormycosis<sup>Trusted Source</sup>, including rhinocerebral (sinus and brain), pulmonary (lung), gastrointestinal, and cutaneous (skin) mucormycosis.

Respiratory-related symptoms include:

cough

fever

headache

chest pain

nasal or sinus congestion and pain

shortness of breath

Skin-related symptoms, which can occur in and spread to any part of the body, include:

blackened skin tissue

redness, swelling, tenderness

blisters

ulcers

Mucormycosis is not contagious, and most people who come in contact with the fungi do not develop an infection. However, people with severely weakened immune systems are at increased risk of mucormycosis. This includes people with:

diabetes

cancer

HIV

skin injury

surgery

Doctors can treat the infection by administering antifungal medication or performing surgery to remove the affected area. If left untreated, mucormycosis can be fatal, with a mortality rate of 54%, according to the Centers for Disease Control and Prevention (CDC) [Trusted Source](#).

COVID-19 and mucormycosis

Higher rates of mucormycosis cases in India are due to a combination of factors. For instance, more than 30 million people in India have a diabetes diagnosis. Despite this, the number of cases of mucormycosis before the COVID-19 pandemic was relatively low, although prevalence was rising [Trusted Source](#).

Since the start of the COVID-19 pandemic, however, there has been a dramatic increase. Dr. Arvinder Singh Soin, a pioneering surgeon in Delhi, notes that he has “seen more cases of black fungus in the past week than we normally treat in 2 years.”



COVID-19 leads to a weakened immune system, preventing the body from effectively protecting against infection. As a result, individuals recovering from COVID-19 are at risk for mucormycosis.

Christopher Coleman, assistant professor of infection immunology at the University of Nottingham in the United Kingdom, told Medical News Today:

“The virus, as part of its replication cycle, suppresses the immune system, so the immune system cannot clear other bacteria or fungi. The most famous example of this is HIV, of course, which causes long-term immune suppression. But, other viruses do this on a much shorter timescale — i.e., the immune system is only slightly suppressed for a few days or weeks while the virus is there.”

Steroid treatments for COVID-19 may also act to suppress the body’s immune response, contributing to these increased mucormycosis infection rates.

“In this case,” explained Coleman, “there seems to be a suggestion that steroids may be playing a role — in that they are suppressing normal immune responses and allowing a fungus to invade.”

In addition, oxygen support for people with severe COVID-19 can cause drying of the nasal cavity and further increase the risk of infection.

On May 19, the state of Rajasthan declared a mucormycosis epidemic. In the city of Surat, 8 out of 40 COVID-19 survivors who developed mucormycosis in the eye lost their eyesight.

The state of Maharashtra reported over 2,000 recent cases of mucormycosis, with 8 resulting in death. The state’s health minister, Rajesh Tope, announced that they will be creating special wards and launching an awareness campaign to spread awareness about the disease.

Next steps for treatment

It is difficult to determine the best course of action to simultaneously address both of these epidemics. Coleman raises some questions that experts need to address moving forward:

“Can the people be treated with an antifungal at the same time?” and “Is there a way to lower the COVID-19 treatment dose and still be effective while not suppressing the immune system enough to allow the fungus in?”

The combined risks of COVID-19 and mucormycosis raise challenging issues and require careful coordination of patient care and treatment.

For live updates on the latest developments regarding the novel coronavirus and COVID-19, [click here](#).

## Stroke

### OCD associated with increased stroke risk (Medical News Today: 20210601)

<https://www.medicalnewstoday.com/articles/oed-may-increase-stroke-risk#Results-and-implications>

Stroke can result in severe disability or death. Identifying risk factors is an important way to help prevent stroke.

Obsessive-compulsive disorder (OCD) is a mental health condition characterized by recurring and unwanted thoughts and behaviors.

New data suggest that individuals with OCD may have an increased risk of ischemic strokes later in life.

The Centers for Disease Control and Prevention (CDC) Trusted Source define stroke as a disruption of blood supply to the brain, which results in death or damage to brain tissue. Strokes are the fifth leading cause of death and a leading cause of disability in the United States.

Scientists are interested in understanding how other health conditions might influence an individual's risk of stroke. Some researchers are focusing on OCD.

A recent paper, which appears in the journal *Stroke*, describes a longitudinal study investigating the risk of stroke in individuals with OCD. The results of the study showed a higher incidence of stroke among individuals with OCD than among those who do not have OCD.

#### Stroke in brief

Strokes are classified as either ischemic or hemorrhagic Trusted Source. In an ischemic stroke, a blood clot or a buildup of plaque blocks blood supply to the brain. In a hemorrhagic stroke, a blood vessel bursts in the brain. As noted by the American Stroke Association, 87% of strokes are ischemic.

Certain risk factors Trusted Source put people at a higher risk of stroke. For instance, some health conditions, including diabetes, high blood pressure, high cholesterol, heart disease, and sickle cell disease increase the risk.

Lifestyle factors can also increase risk, including a diet high in saturated fat and salt, physical inactivity, obesity, excessive alcohol consumption, and tobacco use. Other risk factors cannot be modified, such as age, genetics, and family history.

Identification of risk factors for stroke can be helpful in potentially decreasing a person's risk of stroke. Research is ongoing regarding the increased risk of stroke for individuals with mental health conditions.

What is OCD?

The National Institute of Mental Health (NIMH) defines OCD as:

“[A] common, chronic, and long-lasting disorder in which a person has uncontrollable, reoccurring thoughts (obsessions) and/or behaviors (compulsions) that he or she feels the urge to repeat over and over.”

As noted by the NIMH, the exact cause of OCD is unknown and research is ongoing. Risk factors include having a first-degree relative with OCD or having a history of childhood trauma.

OCD and stroke

The recent study sought to determine if OCD was a separate risk factor for developing a stroke. The authors explain that earlier research shows that individuals with OCD often have other risk factors for stroke, such as obesity and type 2 diabetes. However, the authors write that links between OCD and stroke have “scarcely been investigated.”

The scientists collected data from Taiwan's National Health Insurance Research Database (NHIRD). Individuals included in the sample population were all aged 20 or older with no previous history of stroke.

The participants had all been diagnosed with OCD by a board certified psychiatrist between 2001 and 2010. A total of 28,064 individuals with OCD were involved in the study. The scientists also collated information about antidepressant medications, which doctors sometimes prescribe for OCD.

This group was matched with a control group, accounting for age, sex, area of residence, level of income, and other existing health conditions.

Results and implications

The scientists showed that ischemic stroke was more than three times more common in the participants with OCD than those without OCD. This relationship was most pronounced for people over 60.

OCD remained a risk factor for stroke even after adjusting the analysis to take into account other risk factors, such as smoking, obesity, heart disease, hypertension, type 2 diabetes, and high cholesterol.

However, the authors concluded that there was no increased risk for hemorrhagic stroke among those with OCD. Similarly, they did not identify any links between antidepressants and stroke risk.

The authors note that the relationship between antidepressants and stroke has been inconclusive to date, and further research is warranted.

Medical News Today spoke with Foundation Professor Steven C. Hayes from the University of Nevada in Reno. The fact that antidepressants did not affect stroke risk came as a surprise, he told us:

“Medications for OCD did not seem to alter that risk, but that is curious in a way since medications are used to help alleviate OCD symptoms, so one might expect if they did so, a lower risk of stroke should follow.”

The study did have certain limitations. For instance, it was not possible to prove that OCD caused stroke. Also, there is a possibility that not every stroke that occurred was recorded, as only those who sought treatment were captured during data collection.

Similarly, some contributing factors could not be identified, including OCD severity, environmental factors, and family history. Prof. Hayes explained another limitation to MNT:

“What the design of this study could not address is whether exposure with response prevention or other successful psychosocial treatments for OCD, such as acceptance and commitment therapy, can reduce the risk of stroke as they reduce OCD symptoms. Without that knowledge, it is unclear what a patient should do with this information. It gives those experiencing OCD more to worry about but sadly not something concrete and helpful that they can do with that worry.”

Nevertheless, the study offers good evidence that OCD is a potential risk factor for stroke. The researchers conclude:

“Our findings support the hypothesis that patients with OCD, especially middle-aged and elderly adults, were more likely to develop new-onset ischemic stroke later in life compared with non-OCD controls.”

The take-home message, according to senior author Dr. Ya-Mei Bai, of the National Yang-Ming Chiao Tung University in Taipei, Taiwan, is, “The results of our study should encourage people with OCD to maintain a healthy lifestyle, such as quitting or not smoking, getting regular physical activity, and managing a healthy weight to avoid stroke-related risk factors.”

## Public Health

### Does being part of a larger family raise cardiovascular risk? (Medical News Today: 20210601)

<https://www.medicalnewstoday.com/articles/does-being-part-of-a-larger-family-raise-cardiovascular-risk>

A recent study investigated the association between the number and relative age of siblings and the combined risk of fatal and nonfatal cardiovascular events.

The results suggest that being part of a larger family with multiple siblings or being a second- or third-born sibling could increase the risk of cardiovascular events.

This is the first study involving birth order and family size that also includes the risk of nonfatal cardiovascular events.

According to the World Health Organization Trusted Source, cardiovascular diseases (CVD), which affect the heart and blood vessels, are the leading cause of death globally.

Family history and lifestyle factors such as smoking and an unhealthy diet are well-established risk factors for cardiovascular diseases, including coronary heart disease and stroke.

Besides a family history of CVD largely influenced by genetic predisposition, there is also evidence to show that family structure, especially birth order but not family size, can influence the risk of death due to cardiovascular conditions.

However, only a few studies have looked at the impact of family structure on nonfatal cardiovascular events.

A comprehensive understanding of the impact of family structure on CVD risk requires the inclusion of both fatal and nonfatal cardiovascular events.

A large observational study involving people aged 30–58 years at onset now shows that the number of siblings and birth order can influence the risk of total cardiovascular events over a 25-year follow-up period.

A team of researchers led by Prof. Peter Nilsson at Lund University in Sweden conducted this study. Their findings appear in the journal *BMJ Open*.

#### Linking family structure to cardiovascular risk

To obtain information about family structure, the researchers used the Swedish Multi-Generation Register (MGR) Trusted Source. The register includes records of biological

parents of more than 95% of the population born after 1931 and alive in 1961, thus providing an exceptionally large dataset.

The study included data from 1.36 million men and 1.32 million women aged 30–58 years in 1990. They determined the risk of nonfatal and fatal cardiovascular events as well as total mortality among these individuals using data from death and hospital discharge registers between 1990 and 2015.

Factors such as socioeconomic status, education level, marital status, and medical conditions such as diabetes can influence CVD risk.

The team adjusted their analysis to account for the influence of these variables and isolate the impact of family structure on cardiovascular events.

#### Potential impact of family structure

In terms of family size, men and women with more than one sibling were at a lower risk of death than those with no siblings.

Men with one or two siblings had a lower risk of cardiovascular events than those with no siblings, while those with four or more siblings had a higher risk.

Men with three or more siblings also had a higher risk of coronary events compared with no siblings.

Similarly, compared with women with no siblings, women with three or more siblings had a higher risk of cardiovascular events. In addition, women with two or more siblings had a higher risk of coronary events.

In the case of birth order, first-born individuals had a lower risk of cardiovascular and coronary events than those who were born later.

In contrast, first-born individuals had a higher risk of overall mortality than second-born siblings.

The researchers point out that “more research is needed to understand the links between sibling number and rank with health outcomes.”

#### Implications for public health policy

While the study’s strengths included a large sample size and comprehensive data on family structure and hospital records, it also had some limitations.

The researchers note that the study, owing to its observational design, only shows a correlation between family structure and cardiovascular events and does not establish causation.

Due to the lack of data, the researchers were also unable to account for variables such as diagnostic procedures, parental socioeconomic status, smoking, diet, and other lifestyle factors that could have influenced their analysis of CVD risk.

Since social factors are likely to contribute to the impact of family structure on health outcomes, including cardiovascular risk, the study's results could influence public health policy.

Significantly, this study was conducted in Sweden, which has a generous welfare system. The authors observe that "this is of public health interest as different countries endorse different policies to support families and number of children."

"Future research should be directed to find biological or social mechanisms linking the status of being first born to lower risk of CVD, as indicated by our observational findings," state the authors.

## **Diabetes**

### **Diabetes care falls short for most of the world's population (Medical News Today: 20210601)**

<https://www.medicalnewstoday.com/articles/diabetes-care-falls-short-for-most-of-the-worlds-population#Limitations-of-the-research>

A study of diabetes treatment in 55 low and middle income countries found that many of the participants with diabetes were unaware that they had the condition.

Overall, less than 5% were getting adequate drug treatments and lifestyle advice.

The researchers pooled data from nationally representative surveys that asked people what treatments they were taking to reduce blood sugar, blood pressure, and cholesterol levels and what advice they had received about diet, exercise, and weight.

Diabetes medications are cheap and proven to reduce both the risk of diabetes-associated complications and the long-term costs of care.

The International Diabetes Federation notes that of the estimated 463 million adults in the world who have diabetes, almost 80% live in low and middle income countries.

Diabetes Trusted Source increases a person's risk of a range of disabling and potentially fatal complications, including heart attack, stroke, blindness, and damage to the kidneys and nerves.

Drug treatments for the condition are cheap and proven to reduce morbidity and mortality.

However, the ability of health services in low and middle income countries to diagnose the condition and deliver these treatments is often limited. This inevitably leads to unnecessary suffering and many avoidable deaths.

Doctors at the University of Michigan in Ann Arbor and Brigham and Women's Hospital in Boston, MA, recently led a study to estimate the scale of the problem.

The researchers drew on data from standardized household surveys in low and middle income countries that included information on blood test results for diabetes and self-reported treatments.

They discovered that only 4.6% of people with diabetes were receiving the whole package of care that the World Health Organization (WHO) Trusted Source recommends for treating the condition in primary care.

While 50.5% and 41.3% of the respondents were taking drugs to lower their blood sugar and blood pressure, respectively, only 6.3% were on cholesterol-lowering medication.

Overall, 32.2% of respondents said that they had received advice on diet. Just 31.5% had received advice on weight loss, and 28.2% on exercise.

"Diabetes continues to explode everywhere, in every country, and 80% of people with it live in these low and middle income countries," says lead author David Flood, M.D., M.Sc., who is a national clinician scholar at the University of Michigan Institute for Healthcare Policy & Innovation.

"It confers a high risk of complications, including heart attacks, blindness, and strokes," he adds. "We can prevent these complications with comprehensive diabetes treatment, and we need to make sure people around the world can access treatment."

The research has been published in *The Lancet Health Longevity* Trusted Source.

#### Lack of treatment for high cholesterol

The household surveys provided data for a total of 680,102 adults in 55 low and middle income countries.

Blood tests indicated that 37,094 of these individuals had diabetes. However, only 43.9% of them said that they had received a diagnosis.

Even among those with a formal diagnosis, there was room for improvement in terms of drug treatments. While 85% and 57% of those who knew that they had diabetes were taking drugs



to lower their blood sugar levels and blood pressure, respectively, only 9% were taking a statin to lower their cholesterol.

The researchers write: “Our findings suggest that delivering treatment not only to lower glucose but also to manage [cardiovascular disease] risk factors, such as hypertension and elevated cholesterol, among people with diabetes are urgent global priorities.”

Countries with higher incomes tended to have better coverage across all the diabetes treatments.

Coverage was generally highest in Latin America and the Caribbean and lowest in Oceania (Pacific islands) and sub-Saharan Africa.

The researchers have passed their findings to the WHO, which launched the Global Diabetes Compact Trusted Source on April 14, 2021, to step up efforts to prevent and treat diabetes worldwide.

### Two-way links with COVID-19

People with diabetes and obesity are more likely Trusted Source to develop severe COVID-19 infections, and researchers also believe that COVID-19 may trigger diabetes.

Jennifer Manne-Goehler, M.D., Sc.D., one of the authors of the new paper, told MNT that the pandemic has increased the urgency to improve diabetes services in resource-limited contexts.

Dr. Manne-Goehler is an infectious diseases physician at Brigham and Women’s Hospital and a clinical fellow at Harvard Medical School, both in Boston, MA.

She and her colleagues have found that diabetes is associated with “poor early outcomes Trusted Source” for people hospitalized with COVID-19.

“The COVID-19 pandemic has really highlighted how important the intersection between diabetes and infectious conditions is and the far-reaching implications of ensuring everyone with diabetes has access to much needed services,” she said.

When dealing with diabetes, it can be hard to filter out the noise and navigate your inbox. Healthline gives you actionable advice from doctors that’s inclusive and rooted in medical expertise.

### Limitations of the research

The study authors highlight several limitations in their paper, including inconsistencies across the different surveys in terms of the year they took place, the diagnostic tests that were used, and the age profile of the participants.

These differences and others may account for some of the observed variation in treatment coverage among countries.

The researchers also report that they were unable to get enough data about the availability of counseling to quit smoking.

They write that this is a limitation because smoking is a major contributor to the risk of cardiovascular disease among people with diabetes.